वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अप्रैल – 2016

* श्री देवगुरु भगवान का अमूल्य दान
* अहं के अधिकार में आकर
* अन्धकार क्यों हानिकारक है?
* परम पूजनीय भगवान की सम्बन्धों में आदर्श शिक्षा
* अपने आपको शान्त रखो
* अंधों की संगति
* पति पत्नी की उपेक्षा
* कल्याण सत्संग में बैठकर
* कल्याण सत्संग

श्री देवगुरु भगवान का अमूल्य दान

इस दुनिया में करोड़ों और अरबों जीवित अस्तित्व हैं और वह नाना प्रकार के हैं परन्तु मनुष्य जगत के जीवनधारियों के अतिरिक्त उनमें से किसी में यह योग्यता नहीं है कि वह अपने अस्तित्व आदि के विषय में ठीक ज्ञान और जिन क्रियाओं के द्वारा उनको हानि पहुंचती है, उनसे बचने और जिनसे उनकी रक्षा और उन्नति होती हो, उन्हें जानकर उन्हें करने की शक्ति प्राप्त कर सकें। इसके अतिरिक्त यह अधिकार भी मनुष्य को प्राप्त है कि यदि कोई आत्मिक अमूल्य ज्ञान का दाता प्रगट हुआ हो तो वह उसे पहचाने और उससे महानदान को प्राप्त करे। मनुष्य जीवन का यह अधिकार इतना महान और उच्च है कि इसके बराबर और कोई अधिकार नहीं। परन्तु मनुष्य होकर भी यदि कोई जन अपने अस्तित्व के बारे में अज्ञानी और अबोधी रहे और जैसे कोई गधा या कव्वा अपने अस्तित्व और उसकी गतियों और फलों को नहीं पहचानता वैसे ही यदि कोई जन मनुष्य होकर भी ऐसी हालत में रहे तो इसमें क्या शक है कि वह अपने मनुष्य होने के अधिकार को सफल नहीं करता । कव्वा एक सीमा तक अपने शरीर को जानता है और उसकी रक्षा और पालना के लिए कुछ गतियां करता है। वह पूर्णत: स्वार्थी होता है। जैसे कौव्वा जब किसी दूसरे पशु के जख्म पर चोंच मार कर उसका मांस निकाल निकाल कर खाता रहता है और उसे उस पशु के दुख की कोई परवाह नहीं होती वैसे ही एक एक स्वार्थी मनुष्य की स्वार्थ मूलक गतियां चाहे किसी की भी हानि करती हों उसकी उसे परवाह नहीं होती। इसीलिए स्वार्थी मनुष्यों में से हज़ारों लाखों का जीवन एक एक कौव्वे की तुलना से भी बहुत बढ़ चढ़कर हानिकारक और कष्टदायक प्रमाणित होता है। ऐसे मनुष्य के अन्दर ऐसा कोई बोध नहीं होता कि जिसके द्वारा वह किसी दूसरे के दुख और हानि को महसूस कर सके, इसीलिए स्वार्थी आत्मा विश्व का अंग होकर भी उसके विभिन्न भागों के अस्तित्वों के लिए कई प्रकार से दुखदाई और हानिकारक प्रमाणित होता है और उनको हानि पहुँचाकर अपने आत्मा की भी हानि करता है और उसे तबाह और बर्बाद करता है। जब तक किसी मनुष्य के अन्दर केवल ऐसी शक्तियां वर्तमान हों कि जिनके द्वारा वह केवल स्वार्थ का जीवन रखता हो, तब तक वह यदि दिखावे के लिए किसी दूसरे के भले के लिए कोई ख्याल या गति करता भी हो तो वास्तव में वह गति वह अपने स्वार्थ के लिए ही करता है।

पृष्ट 12 का बाकी

चयन पर करें विश्वास : एक बड़ी अजीब बात यह भी है कि जो रिश्ते हम खुद नहीं चुनते, उन्हें निभाने पर हमारा ज़्यादा जोर रहता है, किंतु जो रिश्ता हम स्वयं चुनते हैं (प्रेमी – प्रेमिका / पति – पत्नी), उसमें अलग होने का विकल्प क्यों रहता है? जन्म से मिले रिश्ते में कभी पिता या मां बदलने का ख़्याल भी नहीं आता, लेकिन पति / पत्नी या प्रेमी – प्रेमिका की जगह किसी अन्य को भी रखकर देख लेते हैं। क्यों? जबकि होना तो यह चाहिए कि जो रिश्ता हमने दिल – दिमाग से खुद चुना है, उसे निभाने और कायम रखने के लिए अधिक प्रयास किए जाने चाहिएं।

क्या कभी यह ख़्याल आया?

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 4

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | अप्रैल – 2016 वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

अहं के अधिकार में आकर

(श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज)

"भगवान ने कृपा करके .....अहं के अनुचित अधिकार की महा भयानक तस्वीर ऐसे रोशन रूप में ..... प्रगट की कि उसको देखकर मेरे सामने अहं के अनुचित अधिकार के महा भयानक फलों के सम्बन्ध में सचमुच एक नई दुनिया खुल गई। मैं देखा कि : –

(1) निश्चय एक एक जन अहं के अनुचित अधिकार में आकर केवल यह नहीं कि वह किसी नीचता या किसी सम्बन्ध में अपनी किसी हानिकारक गति को आप देखने के अयोग्य बन जाता है, बल्कि यदि उसका कोई बड़े से बड़ा हितकारी सम्बन्धी भी उसको उस विषय में, उसकी वास्तविक तस्वीर दिखाना चाहे, तब भी वह उसको देख नहीं सकता।

(2) निश्चय एक एक जन अहं के अनुचित अधिकार में आकर इस दर्जे तक अन्धा हो जाता है कि केवल यही नहीं कि उसको अपने शिक्षकों और गुरू जनों के भीतर कोई ऐसा उच्च आत्मिक अंग दिखाई नहीं देता कि जिसकी प्राप्ति के लिए उसको कोई बाक़ायदा साधन और संग्राम करने की आवश्यकता हो। बेशक उसका कोई बड़े से बड़ा हितकारी भी, उसके भीतर किसी उच्च अंग की कमी को उसको दिखाना और उसकी प्राप्ति की आवश्यकता को उसे बोध कराना चाहे फिर भी उसको देखने और उसको प्राप्त करने की इच्छा करने के अयोग्य हो जाता हैं।

(3) "निश्चय अहं के अनुचित अधिकार में आकर एक – 2 जन की यहां तक किस्मत फूट जाती है कि जितना उच्च बोध – धारी सम्बन्धियों के तुअल्लक में आकर उसके हित का बन्द द्वार खुल सकता है, उनके साथ सम्बन्ध बनाने से जब उसके जीवन के किसी अंग में उसकी किसी ग़ल्ती या कमी को उस पर प्रगट करते हैं, तब ही वह उनकी ऐसी बात से उनसे दूर चला जाता है। अहं अपने भले का मार्ग बन्द करने का काम करता है।

(4) सचमुच किसी मनुष्य के लिए इससे बढ़कर और क्या घाटे की बात हो सकती है कि उसके वजूद पर गन्दगी लगी हुई हो और वह उसको न अपने आप नज़र आती हो, और न किसी के बताने पर दिखाई देती हो। उसे भिन्न – 2 भयानक रोग खा रहे हो और वह न स्वंय उनके पहचानता हो और उनसे छुटकारा पाने का कोई फिकर करता हो और न किसी दूसरे के कहने पर उसकी ओर ध्यान देता हो और दे सकता हो। सचमुच किसी मनुष्य की इससे

बढ़कर कृपा-पात्र अवस्था और क्या हो सकती है, कि वह नंगा और भूखा और बेसरो सामान खड़ा हो और किसी के बताने या खाने पीने और पहनने के सामान उसे देने पर भी वह उधर ध्यान न दे सकता हो। सचमुच किसी मनुष्य के इससे बढ़कर और क्या मन्दभाग्य हो सकते हैं कि जिन जनों के द्वारा उसके बचने की कोई सूरत निकलनी सम्भव हो, उनकी ओर से भी कोई हमदर्दी वा सहायता पाने की हालत में न रहे।

"अहं के अनुचित अधिकार के महा भयानक फलों की उपरोक्त डरावनी तस्वीर इतने स्पष्ट रूप से मेरे सम्मुख प्रगट हुई और उससे लाखों और करोड़ों मनुष्यों का साधारण और सैंकड़ों सेवकों की विशेष रूप से ख़ौफ़नाक हानि होने की सम्भावना मुझे इतनी स्पष्ट शक्ल में महसूस हुई कि मैं इस सारी तस्वीर को किसी कदर विस्तार के साथ लिखने के लिए मजबूर हो गया। हक़ीक़त में अहं के प्यार का भाव जितना किसी मनुष्य में बढ़ता चला जाए, उतना ही उसको, उसकी अपनी बात, अपना ख़्याल, अपनी रुचि, अपना फैसला, इतना प्यारा लगने लग जाता है कि उसके विरूद्ध वह न स्वयं सोचने के योग्य रहता है और न ही किसी दूसरे (वह वजूद चाहे उसका कितना ही बड़ा उपकारी, हितकारी और बज़ुरग क्यों न हो) के द्वारा सुनने के योग्य रहता है। उसकी बात में कितनी भी मोटी से मोटी ग़ल्ती हो और उसके फैसले में उसके अपने वजूद के लिए या दूसरों के लिए कैसे ही हानिकारक और क्लेश दायक परिणाम के पैदा होने की सम्भावना हो, वह मोटी से मोटी ग़ल्ती और बड़ी से बड़ी हानि को स्वयं देखने और अपने प्यारे से प्यारे और बड़े से बड़े हितकारी के द्वारा इसके विषय में सुनने और सुनकर विचार करने के अयोग्य हो जाता है। कैसी भयानक अवस्था! हां, ऐसे अहं प्रियता के भाव के बहुत बढ़ जाने पर एक 2 मनुष्य की ऐसी दुर्दशा हो जाती है, कि उसको फिर यह भी दिखाई नहीं देता कि उसकी ऐसी दुर्दशा हो रही है। उसके आसपास रहने वाले, उसके साथ मिलने जुलने वाले कितने ही जन उसकी इस कृपा-पात्र अवस्था को देखते हैं, परन्तु हाय! उसे स्वयं अपनी यह तरसनाक हालत नज़र नहीं आती। अहं प्रिय जन की इससे बढ़कर भयानक हालत उस समय होती है कि जब जिस "मैं" के अनुचित अधिकार ने उसकी यह दुर्दशा बनाई है, जब वह एक तरफ अपने भीतर 'मैं' के अनुचित अधिकार की कथा सुनने के भी योग्य नहीं रहता और दूसरी ओर इस 'मैं' के भयानक अधिकार के घटाने का जो साधन उसको बताया जाए" उसे वह ग्रहण और पूरा करने के अयोग्य हो जाता है।

"बिमार होना ही मनुष्य का बहुत बड़ा दुर्भाग्य होता है, परन्तु इससे भी बढ़कर दुर्भाग्य होता है यदि एक ओर वह बिमार अपनी बिमारी का ज़िकर तक न करे, सुनना पसंद न करता हो और दूसरी ओर कोई दयावान डाक्टर या हकीम उसको कोई दवाई देना चाहे तो वह उस दवाई को ही लेना न चाहता हो, तो ऐसे बिमार की हालत बहुत ही अधिक कृपा-पात्र है। सबसे बढ़कर इससे भी आगे किसी बिमार की यह भयानक हालत होती है कि जिसमें पहुंचकर वह बिमार करने वाले सामानों और सम्बन्धियों को चाहने लग जाता है और उनकी तरफ दौड़ दौड़ कर जाता है। और जो जन इसके ईलाज की सोचते हों,

उसकी बिमारी के दूर करने की इच्छा और सामर्थ्य रखते हों, उन्हें घृणा करता और उनसे दूर दूर रहना चाहता हो।

"मुझे स्वयं अपनी ज़िन्दगी में उपरोक्त सबसे बढ़कर भयानक और शर्मनाक हालत का भी अच्छी तरह तजरबा हो चुका है और मैं स्वंय इस हालत से किस प्रकार निकला हूं, इसकी संक्षेप कथा को वर्णन किया है। मैं आशा करता हूं इससे पाठकों को अपने लिए और उनके द्वारा किसी और जनों के लिए बहुत लाभदायक होगा।

अन्धकार क्यों हानिकारक है?

रात के समय मुझे हल्की सी रोशनी जगाकर रखने की आदत है, परन्तु किसी कारण वश बिजली चली गई। मुझे रात को उठना पड़ा, मेरा अपना ही कमरा, जिसकी प्रत्येक वस्तु कहां रखी है, इसका मुझे पूरी तरह ज्ञान था, परन्तु मैं बाथरूम की ओर जाने लगी, तो दो तीन चीज़ों से टकाराई, फिर भी मुझे घुप अन्धेरे में पता न लगे कि मैं किधर से जाऊं, फिर एक स्थान से पता लगा कि इधर को बाथरूम का दरवाजा है। अन्धेरे ने अपने ही घर में, अपने ही कमरे में मुझे गुमराह कर दिया।

अन्धेरे के कारण रस्सी को सांप समझकर मनुष्य डर जाता है। अन्धेरे में हम हानि उठाते हैं और दुखी होते हैं।

इसी प्रकार मान्सिक अन्धेरा आज मानवता को गुमराह किए हुए है। बड़े 2 पढ़े लिखे, विद्वान, कलाकार इस अन्धेरे में इस कदर धंस चुके हैं कि मन्दिरों में, पूजा – घरों में जाकर समझते हैं कि हमारी मान्यताएं पूरी होंगी। लाखों करोड़ों रुपये वहां दान किए जाते हैं, जो रुपये यदि गरीबों पर लगाए जाएं तो उनके घर बस सकते हैं। इसी अन्धेरे का लाभ कुछ चुस्त, चालाक लोग उठा रहे हैं। सन्तों, महन्तों, देवियों की भी बाढ़ आ गई है। वह सब करोड़ों पति बन गए हैं और जनता की जेबें खाली हो रही हैं।

अब कितने सन्त महन्त अपने कुकर्मों के कारण जेल में हैं, फिर भी उनके श्रद्धालु उनके पक्ष में खड़े हो रहे हैं। मनुष्य का लालच, सुखों का प्यार यह अन्धेरा पैदा करता है, और यह लत अमरीका जैसे सुसभ्य देशों में भी फैल रही है। हिन्दी Channels पर उनके विज्ञापनों की भरमार है, अब वहां की सरकार इसका कुछ समाधान ढूंढ़ रही है। अन्धेरा इतना गहरा है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले भी लाखों जन आस्था के नाम पर इन्हीं विश्वासों में डूबे हुए हैं। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी दुःख वा परेशानी में तो घिरा हुआ है ही, उसको दूर करने के सरल उपाय बताकर यह धर्म की दुकानें चलाने वाले अपने सुखों के अनन्त साधन बना लेते हैं।

बाहर का अन्धेरा जितना हानिकारक है, उससे भी बढ़कर यह मान्सिक अन्धेरा ख़तरनाक है। धर्म के नाम पर जो आतंकवाद फैला हुआ है, उसकी तह में भी यही है। यह साधारण बात भी मनुष्यों को समझ नहीं आती कि दूसरों को मारकर वा दुःख पहुंचाकर बहिश्त वा स्वर्ग कैसे मिल सकता है? पापों से भी बढ़कर यह धार्मिक जनून मनुष्यों को अन्धेरे में धकेल रहा है।

अन्धेरे का दायरा यहां तक ही सीमित नहीं। हमारे जितने भी सुख अनुराग हैं, चाहे वह शरीर सम्बन्धी

सुख अनुराग हों, अहं सम्बन्धी सुख अनुराग, स्वाद सुख, धन का प्रेम, सन्तान का प्रेम, काम अनुराग का सुख, जिस 2 सीमा तक यह बढ़ जाते हैं, मनुष्य को अन्धा और पागल बना देते हैं। उसमें चाहे उसके स्वास्थ्य की हानि हो, बच्चों का भविष्य दांव पर हो, चाहे बलात्कार वा और घिनौनी हरकतें करके जेल जाना पड़े, उसे कुछ नज़र नहीं आता। यह सुख प्राप्त करते 2 वह कहां पहुंच जाएगा, यह नज़र नहीं आता।

धन के प्रेम ने एक–2 जगत प्रसिद्ध विद्वान को जेल में पहुंचा दिया। सर फ्रासिंस बेकिन, इंगलैंड के उस समय के खज़ाना मन्त्री थे, जब कहते थे कि इंगलैंड में सूरज नहीं छुपता, उनका एक छत्र दुनिया पर राज था। उनको कितना पैसा मिलता होगा, कितनी सुख सुविधाएं थी, ऐसे बुद्धिजीवी थे कि उनके एक 2 फिक़रे पर लेख लिखे जाते थे। ज्ञान की कोई कमी नहीं थी। उन्होंने वैज्ञानिक विधि का अविष्कार किया था। अंग्रेजी साहित्य की, M.A. करने वालों को उनकी कोई न कोई लेखनी अवश्य पढ़नी पड़ती है। रिश्वत के जुर्म में उन्हें जेल जाना पड़ा और सुख सुविधाओं में जीने वाले एक महान विद्वान ने अपने आखिरी वर्ष जेल के दुखदाई वातावरण में काटे।

धन अनुराग से उत्पन्न अन्धेरा कत्ल करवा देता है। भाई भाई का दुश्मन बन जाता है। बेटा बाप का शत्रु बन जाता है और जो घोटाले, बेईमानी, रिश्वतखोरी, दूसरों के हकों का अपहरण इस सुख के अधीन होता है, उससे प्रतिदिन अखबार भरे पड़े हैं। उच्च से उच्च पदधारी जेलों में हैं और कई जाने वाले हैं, परन्तु धन अनुराग का अन्धेरा इतना गहरा है, दूसरों की बदहाली देखकर भी वह फिर भी इसी काम में लगे हुए हैं, उन्हें कुछ नज़र नहीं आता। संस्थाएं जो शिक्षा का, भलाई का केन्द्र होनी चाहिएं, उनसें भी सेंध लग गई है, उनको चलाने वाले ईमानदार आदमी ग़ायब हैं, लुटेरों के हाथों संस्थाएं ही क्या सारा देश ही लुट रहा है।

इसी प्रकार स्वाद के सुख ने तरह–2 के पकवानों का मनुष्य को शैदाई बना दिया है। क्या खाना चाहिए, कितना खाना चाहिए, कब खाना चाहिए यह अन्धकार कुछ देखने नहीं देता। आज जो बिमारियां फैल रही हैं, वह सब man-made हैं।

काम अनुराग तो सारे विश्व में इस हद तक फैल गया है, वफादारी, पवित्रता जो हमारे देश की संस्कृति का महत्वपूर्ण भाग था, वह ग़ायब हो चुका है। बच्चों से लेकर बूंढ़ों तक इसके बुरी तरह शिकार हैं। बलात्कार जैसा घिनौना पाप अब प्रतिदिन के अखबारों की हैड लाईन बन गया है। बलात्कारियों से जेलें भर रही हैं, परन्तु फिर भी यह घिनौना पाप जारी है। मनुष्य के इस सुख ने उसे अन्धा, पागल, बेवफा बना दिया है, इसके कारण परिवारों में जो नर्क है, उसकी घटनाएं हमारे सामने हैं। पिताओं से बच्चियां सुरक्षित नहीं, इससे बढ़कर दुर्भाग्य क्या हो सकता है?

उपरोक्त सुख अनुरागों के विषय में सोचने से हम समझ सकते हैं कि यह मनुष्य को अन्धा, पागल, अपनी हानि करने वाला और दूसरों की हानि करने वाला बनाते हैं। प्रत्येक सुख अनुराग अन्धेरा पैदा करता है और मनुष्य अपनी हानि वा हित को समझने के अयोग्य होता जाता है। धन्य हैं सत्गुरू जिन्होंने हमें कुछ न कुछ मान्सिक उपलब्धि दी है।

सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान की सम्बन्धों में आदर्श शिक्षा

हम नाना प्रकार के सम्बन्धों में बन्धे हुए हैं। यह सम्बन्ध अनिवार्य हैं। हमारे जीवन का आधार हैं। हमारा जन्म, हमारा पालन – पोषण, हमारी शिक्षा, हमारे ईलाज, हमारी सुविधाएं, हमारा खान पान सब भिन्न – भिन्न सम्बन्धों पर निर्भर करता है, परन्तु हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे धर्मों ने इन सम्बन्धों के साथ मित्रवत सम्बन्ध बनाने की अपेक्षा उन्हें त्यागने की शिक्षा दी है। सम्बन्धों को मायाजाल बताया है। सुख अनुरागी मनुष्य ऐसा ही सोच सकते थे, क्योंकि सम्बन्धों में रहकर तरह 2 का संग्राम करना पड़ता है, दुःखी होना पड़ता है, पसीना बहाना पड़ता है, इनसे आज़ाद होकर आलस्य, स्वार्थ वा भिख़मंगों की जिन्दगी जीना धर्म समझा गया है। परमेश्वर, जो दिखाई नहीं देता, रोक टोक नहीं करता, कोई मांग नहीं रखता, उस कल्पना मूलक अस्तित्व से योग और अन्य सम्बन्धों का त्याग करके धर्मवान बनना कैसे सम्भव है? सम्बन्धों को त्याग कर क्या मनुष्य जगत से जन्म पाना, पालना करवाना, पशु और वनस्पति जगत से सेवा पाना, धरती का आधार पाना क्या यह सब मिथ्या हैं? कितनी विडम्बना है कि मनुष्य तर्क के साथ यह भी नहीं समझते कि हम चाहकर भी सम्बन्धों का त्याग नहीं कर सकते। अगर जंगलों में सम्बन्धों का त्याग कर चले जाएं तो भी हमारी निर्भरता पृथ्वी, वनस्पति जगत, पशु जगत पर रहेगी।

परम पूजनीय भगवान ने सम्बन्धों को ही धर्म का आधार बताया है, यदि सम्बन्धों में हमारे व्यवहार अच्छे हैं तो हम धर्म की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। पूजनीय भगवान ने 16 सम्बन्धों में निर्देश दिए हैं कि इन सम्बन्धों में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। सब सम्बन्धों में ही उनके उपकारों के लिए हमें शुक्रगुज़ार होना चाहिए, क्योंकि कृतज्ञता का भाव सब सम्बन्धों को सुन्दरता, आनन्द वा मधुरता प्रदान करता है। इस भाव से ही हम यह अनुभव कर सकते हैं, कि हम अपने जन्म, उन्नति और विकास के लिए दूसरों पर निर्भर हैं। हमारा जन्म माता – पिता के कारण है, उन्हीं की सेवा वा त्याग का परिणाम है। उन्हीं की कृपा से हमारे अंगों का विकास होता है। हमारे विकास वा उन्नति में वही हैं, जिनको सच्ची प्रसन्नता होती है। उनको मिथ्या कैसे माना जाता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने ही हमें कृतज्ञता के शब्द का अर्थ बताया है। कृतज्ञता आख़िर है क्या? मोटे तौर पर यदि हम अपने आस पास नज़र डालें कि हमें ज़िन्दगी में जो कुछ हासिल हो रहा है, उसमें किन किन चीजों का योगदान है, तो हम उन सब के प्रति अपने आपको ऋणी अनुभव करें। आपके सामने जब रोटी की थाली आती है, उसमें कितने जनों का योगदान है? बीज बोने वा फसल तैय्यार करने वाले किसान से लेकर अनाज बेचने वाले, फिर दुकानदार तक पहुंचने, फिर दुकान से खरीदकर, आटा बनाने और रोटी बनाने के पीछे कितने जनों की मेहनत हैं। इस प्रकार हमारी जो भी आवश्यकताएं पूरी होती हैं, उनके पीछे कितनों की मेहनत वा योगदान हैं। बात यह नहीं कि हमने पैसे चुका दिए, उसके बदले में यह हमें मिला है। इसमें कौन सी बड़ी बात हैं। अगर इस प्रक्रिया में जुड़े लोगों ने अपना अपना काम न किया होता, तो पैसे खर्च करके भी हमें यह सब न मिल सकता। आँखें खोलें और देखें कि किस प्रकार आपके भरण पोषण में हर प्राणी योगदान दे रहा है। यदि यह एहसास हमें हो जाए तो फिर हम कृतज्ञ हुए बिना नहीं रह सकते, हमारी अकड़ ठण्डी पड़ जाएगी। कृतज्ञता ऐसा झरना है, जिसके फूटने से हर सम्बन्ध में मिठास भर जाती है। लेकिन केवल धन्यवाद

कहने से तो शिष्टाचार पूरा होता है, कोई कृतज्ञ नहीं बनता, हां, न कहने से अच्छा है। जब आप कृतज्ञ अनुभव करेंगे तो उन सब उपकारियों के प्रति जिनका पग पग पर आपके जीने में सहयोग है, आदर की दृष्टि से देखेंगे, उनके लिए कुछ करने के लिए इच्छुक होंगे। यह ऐसा सुन्दर भाव है, जो नारकी परिवारों को स्वर्गिय बना देता है, परन्तु अफसोस कि सबसे बढ़कर मानवता में इसका अभाव है।

आजकल वनस्पति जगत के सम्बन्ध में दिन हैं, जो आपके पास यह पत्रिका पहुंचने तक समाप्त हो जाएंगे। परन्तु मुझे यह जगत बहुत प्यारा है। इससे हमें क्या कुछ मिलता है, उसका अन्दाजा भी कठिन है। हमें मोटे तौर पर यही पता है कि हमारी सांसों के ज़हर अर्थात कार्बनडक्साईड को यह खुद ग्रहण करके हमें आक्सीजन देता है, जिसके सहारे हम ज़िन्दा हैं। यह हमें अनाज देता है, दालें देता है, ऐसी जड़ी बूटीयां देता है, जिनसे आर्युवैदिक दवाएं तैय्यार होती हैं। यह हमें तरह तरह के नटस अर्थात बादाम, पिस्ता, काजू, खजूर, नारियल आदि पदार्थ देता है। यह हमें तरह 2 के फल देता है, जो हमें सेहतमन्द बनाते हैं। गन्ना और गन्ने से बनने वाली शक्कर, गुड़ और चीनी देता है। तरह 2 की दालें जो शाकाहारियों के लिए प्रोटीन का स्रोत हैं, यही जगत प्रदान करता है। बीज, तिल, तरह तरह के तेल निकालने वाली फसलें यही जगत प्रदान करता है। ऐलोवेरा, ग्लो,नीम आदि जो तरह–2 बिमारियों में लाभदायक हैं यही जगत हमें प्रदान करता हैं।

इतर, खुशबूदार सैंट, इसी जगत की उपज से तैय्यार होते हैं, जिनका प्रयोग करके मनुष्य अकड़ता है, यह प्रश्न ही नहीं करता कि इसके पीछे कौन सा उपकारी जगत है।

इससे भी आगे वनस्पती जगत तरह 2 के रंग बिरंगे फूलों की छटा बखेरता है। मुझे ऐसा लगता है कि फूलों, बच्चों और संगीत के बिना यह दुनिया बेरंग दिखेगी। फूल जो छटा बिखेरते हैं, वह अद्भुत खुशी देते है। एक 2 फूल जब खिलता है, उसे देखकर मुझे तो ऐसा लगता है कि दिन भर की खुशी मिल जाती है। केवल थोड़ी सी खाद और पानी लेकर इनकी सुन्दरता देखते ही बनती है। अब तो सभ्यता के विकास से फूलों की मांग दिन पर दिन बढ़ रही है, इनकी प्रदर्शनियां लगती हैं, परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा के भीतर सब सुन्दरताओं के लिए प्यार था, इसलिए वह जहां भी रहे अपने निवास स्थान को फूलों से सुसज्जित कर दिया। सोलन पर्वत आश्रम का नाम ही लोगों ने फूलों वाली कोठी रख दिया था, लोग देखने के लिए आते थे। पहाड़ों पर उस समय पानी उपलब्ध नहीं था। पूजनीय भगवान ने इच्छा ज़ाहिर की कि हमारे पर्वत आश्रम में फूल होने चाहिएं। फिर क्या था, बाहिए का शहज़ादा, एफ. सी. कालिज के ग्रेजुएट ने मशक बना ली, 2 - 2½ किलो मीटर नीचे चश्में से मशकें भर भरकर लाकर उसे फूलों वाली कोठी बना दिया। उनकी ऐसी तपस्या को भी हम जितना सन्मान दें कम है। वह भी ज़माना था जब इस पृथ्वी पर ऐसे तपस्वी पैदा हुए ।

परम पूजनीय भगवान की शिक्षा हर पहलु में निराली है। परन्तु उस समय में भी उनका सफाई, परिपाटी और फूलों का प्यार उनके आदर्श जीवन को दर्शाता है । ऐसे सत्गुरू की शिक्षा को और हम समझें या न समझें, परन्तु अपने स्थानों पर सफाई तरतीब रखकर और कुछ न कुछ फूल रखकर हम उनकी थोड़ी सी खुशी प्राप्त कर सकते हैं। पौधों के जगत की सुन्दरता को सराहें और इस जगत से मिलने वाले पदार्थों को याद करके उसके आगे झुकें और शुक्रगुज़ार महसूस करें।

–सुरजीत बराड़

अपने आपको शान्त रखो

"हर किसी को गुस्सा आता है - यह आसान है, परन्तु सही आदमी के साथ, सही मात्रा में, सही समय पर, सही उद्देश्य को लेकर, सही तरीके से गुस्सा करना आसान नहीं है।" अरिस्टोटल (Aristotle) ने यह कहा है। हमारे जीवन में प्रैशर और दबाव (stress) हैं, छोटी सी खीझ (irritation) से हम अपना आपा खो देते है। दिन के अन्त में एक ओर पूरे दिन के काम की थकान के बाद जब हम घर में जल्दी पहुंचना चाहते हैं, हम ड्राईवर के धीरे गाड़ी चलाने पर चिल्लाते हैं, क्योंकि उसे तो जैसे इस दुनिया में कोई काम नहीं। जब हम राशन की दुकान से खरीदारी करते हैं, हम स्टाक क्लर्क पर गुस्सा होते हैं, जो हमें गल्त स्थान (aisle) पर भेज देता है, जबकि हमें रात को खाना बनाने के लिए आवश्यक वस्तुएं चाहिए होती हैं। और जब हम रात्रि को भोजन करने के लिए बैठते हैं, तो हम ऐसे मार्कटर पर चिल्लाते हैं जो अपना सामान बेचने के लिए हमारे खाने में ख़लल डालता है।

रोज़ रोज़ गुस्सा करने से यह हमारी आदत बन जाती है। दूसरी आदतों की तरह ऐसा समय आ जाता है, जब हमारा यह दूसरा स्वभाव बन जाता है। हमारे व्यक्तिगत सम्बन्धों में खलल पड़ जाता है, जब हमारे बिज़नेस में, हिस्सेदारी में, फूट पड़ जाती है। अपने प्रति विश्वास खो जाता है, जब तुम्हें सब जल्दी से फट जाने वाली तोप समझने लगते हैं। प्रभावशाली लोग स्वभाव में स्थाई होते हैं और उनके विषय में अनुमान लगाना सरल है। शान्त लोग कठिन समय में और pressure (दबाव) में भी सदा शान्त रहते हैं। कठिनाई के आने पर अपने आपको शान्त रखने से तुम वर्षों तक दुख और दर्द से बचे रह सकते हो। गुस्से से भरकर बोले चन्द कटु शब्दों ने बहुत से जनों की गाढ़ मित्रता को समाप्त कर दिया है। शब्द तीरों की न्याई होते हैं, एक बार मुंह से निकले हुए वापिस होने असम्भव होते हैं। इसलिए आपको अपने शब्द बहुत सावधानी से चुनने चाहिएं ।

एक शानदार और आसान तरीका अपने गुस्से पर काबू पाने का है कि आप 100 गिनने लग जाओ, इससे पहले कि तुम उस जन का उत्तर दो जिससे तुम खीझ रहे हो। दूसरा साधन जो हम इस्तेमाल कर सकते हैं, जिसे मैं "तीन दरवाजों का टैस्ट" नाम देता हूं। पुराने साधु तब बोलते थे, जब उनके कहे जाने वाले शब्द तीन दरवाज़ों में से, गुज़रते थे। पहले दरवाजे पर वह अपने से पूछते थे, क्या यह शब्द सत्य है? यदि है तो वह दूसरे दरवाजे से गुजरते थे, उस दरवाजे पर वह अपने से पूछते थे, क्या यह शब्द सत्य हैं? यदि है, तो वह तीसरे दरवाजे पर जाते, जहां पर पूछते कि क्या यह शब्द सहानूभूति पूर्ण हैं? यदि हैं, तब वह अपने होंठ खोलते थे और उनके मुंह से शब्द निकलते थे। "दूसरे लोगों से वैसा व्यवहार करो जो करना चाहिए, और जहां तक आपकी योग्यता है, उनकी मदद करो" यह समझदारी के शब्द एक जर्मन कवि के द्वारा कहे गए हैं।

(Translated from the book "who will cry when you Die" written by Robin Sharma Chapter "Keep your cool")

अंधों की संगति

आज के दौर में सामान्य जीवन जीना भी बहुत मुश्किल हो गया है तो सोचता हूँ कि ग़रीब इंसान जिसके पास कमाई का कोई विशेष साधन नहीं है, वह गुज़ारा कैसे करता होगा? और ऐसे में किसी जन के लिए धर्म-ज्ञान प्राप्त करना तथा सत्य में धर्मवान बनना कितना मुश्किल है। जहाँ चारों ओर हर तरह की बुराई और पाप चरम-सीमा तक फैले हुए हैं, जहाँ भाई भाई का गला काट रहा है, जहाँ कत्लोग़ारत बुरी तरह फैला हुआ है, जहाँ बाड़ (सरकार) ही खेत (देश) को खा रही है, जहाँ धर्म-प्रचारकों के द्वारा धर्म के नाम पर भयानक पापकर्म हो रहे हों, वहां धर्म लाभ करना तथा धर्मवान बने रहना कितना मुश्किल काम हो गया है! हर रोज़ मनुष्य की पाप भरी गतियों की कितनी ख़बरें आती रहती हैं। धर्म के नाम पर ठगी और लूटमार की ख़बरें भी बहुत हैं। अखबार में आज ही एक ख़बर पढ़ रहा था कि एक साधू (पाखंडी) लड़कियों और स्त्रियों को पवित्र करने के नाम पर उनसे व्यभिचार करता था - वह अब तक लगभग 200 लड़कियों और स्त्रियों के साथ ऐसा कुकर्म कर चुका है। ऐसे दौर में साधारण तौर पर जीना भी कितना मुश्किल है।

वर्षों पहले टेलिविज़न पर एक नाटक देखा था जिसमें नायक जो कि पायलट था एक बार अपने ज़हाज़ को उड़ाता हुआ अपने देश से दूर बहुत दूर ले जाता है। दूर के किसी टापू पर उसे अपना ज़हाज़ मजबूरीवश उतारना पड़ता है क्योंकि ज़हाज़ में अचानक कुछ ख़राबी आ गई और वह वापिस नहीं आ सकता था। जब उसने अपना ज़हाज़ उस टापू पर सुरक्षित उतार लिया, तो वहां के रहने वाले लोग धीरे धीरे उस के इर्द-गिर्द इक्कठे होने शुरू हो गए। शुरू-शुरू में तो पायलट ने समझा कि उत्सकतावश वह लोग ज़हाज़ देखने के लिए इक्कठे हुए हैं। लेकिन धीरे-धीरे उसने उस टापू पर अपने उतरने की विवशता उन लोगों को बतलानी आरम्भ की। कुछ ही क्षणों में उसे आभास हुआ, कि जब वह बोलने लगता तो लोग उसकी ओर मुंह न करके अपना चेहरा घुमा लेते और अपने कान उसकी ओर करके सुनने लगते। उसे जल्दी ही आभास हो गया कि टापू पर रहने वाले सब लोग अन्धे थे-शायद वहां की किसी महामारी या किसी और कारण से वह सब अन्धे थे।

पायलट जो कि अपने परिवार, अपने व्यवसाय-संस्थान, अपने मिलने-जुलने वालों आदि से बहुत परेशान रहता था, टापू के लोगों को अँधा देखकर बहुत प्रसन्न हुआ -कारण यह कि वह महसूस करने लगा कि क्योंकि उसके अतिरिक्त वहां सब लोग अन्धे थे, इसलिए उसे किसी से कोई खतरा नहीं था तथा वह उन सब लोगों को अपनी इच्छा के अनुसार चलने और अपनी आज्ञा मानने के लिए बाध्य कर सकता था। उसने सोचा कि वह वापिस अपने देश नहीं लौटेगा बल्कि उसी टापू पर उन लोगों का राजा बन कर हुकूमत करेगा। अब वह प्रसन्नतापूर्वक वहां आराम से रहने लगा।

वह सुबह देर तक सो कर मज़े से उठता और लोग उसकी बहुत सेवा करते। क्योंकि वह देख सकता था और बाकी सब लोगों ने वातावरण को अपनी आँखों से कभी देखा नहीं था इसलिए वह उन्हें सुबह की मनोरम शोभा के दृश्यों के बारे बतलाता। उन्हें पहाड़ों, फूलों, फलों, सूर्य के उगने, वर्षा ऋतु के सुहावने मौसम के बारे बतलाता। इंद्र-धनुषीय रंगों की आभा, शाम के तथा रात्री के दृश्यों, चाँद-तारों की शोभा के बारे बतलाता। पक्षियों के सुन्दर-सुन्दर रंगों और उनके चहचहाने के

बारे बतलाता। जिस – जिस दृश्य को उसके बोध जान सकते, उन सब सुन्दर – सुन्दर नज़ारों के बारे बतलाता रहता। वह वहां बहुत प्रसन्न था कि उसका कोई विरोधी नहीं है।

उस पायलट की बातें सुन – सुनकर लोग बहुत हैरान और परेशान होते और सोचते कि न जाने इस व्यक्ति को क्या हुआ है। यह हर समय कैसी बहकी – बहकी बातें करता रहता है। हम लोगों में से तो कोई ऐसी बातें नहीं करता। अवश्य इसके दिमाग़ में कुछ खलल है और इसका मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ है। लोग उसकी इस अवस्था का कारण जानने के लिए उतावले रहने लगे। इसी तरह समय बीतता गया और वह पायलट खुशी खुशी अपने दिन वहां बिताता रहा।

एक दिन अचानक उसने लोगों के व्यवहार में कुछ ऐसा परिवर्तन महसूस किया जो शायद उसके लिए शुभकर नहीं था। उस लड़की को जो उसकी वहां सेवा किया करती थी, उसने अपने पास बुलाकर पूछा कि क्या बात है, आज मुझे कुछ अजीब सा लग रहा है। लड़की जो उसे मन ही मन चाहने लगी थी – उसने बतलाया कि लोगों को उस पायलट की दिमाग़ी ख़राबी का कारण पता लग गया है। उसने बतलाया कि लोग समझते हैं कि क्योंकि तुम देख सकते हो इसीलिए तुम बहकी – बहकी बातें करते हो, और तुम्हारी आँखें ही इस बिमारी का मुख्य कारण हैं। उसने यह भी बतलाया कि आज तुम्हारी आँखों का अप्रेशन करके इन्हें तुम्हारे शरीर से बाहर निकाल दिया जाएगा, फिर तुम हमारे जैसे ही जीओगे और बहकी – बहकी बातें करनी बंद कर दोगे।

पायलट को जब यह बातें पता लगीं तो उस के होश उड़ गए। अब वह बहुत पछताने लगा कि मैं कहाँ फंस गया। अब उसे अपने घर और देश की याद सताने लगी और जैसे तैसे करके उसने ज़हाज़ को उड़ने योग्य ठीक किया और अवसर मिलते ही उड़ गया।

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा ने अपनी अद्वितीय धर्म – शिक्षा में यह फरमाया है कि क्योंकि सब मनुष्य – आत्मा आत्मिक तौर पर अधूरे होने के साथ साथ सुखों के अनुरागी और दुखों से घृणा करने वाले जीव हैं – इसलिए आध्यात्मिक तौर पर हम सब गहरे आत्म – अन्धकार में बुरी तरह ग्रस्त हैं। अर्थात आध्यात्मिक तौर पर हम सब अन्धे हैं, हम भी अन्धे हैं और हमारे साथ और हमारे इर्द – गिर्द रहने वाले सब मनुष्य – आत्मा भी अन्धे हैं। आँख के अन्धे को अपने अंधेपन का ज्ञान होता है। वह मानता भी है कि वह अँधा है और किसी भी तरह अपने अंधेपन से छुटकारा पाना चाहता है। परन्तु अध्यात्मिक अन्धा न अपनी इस अवस्था के बारे में जानता है, न मानता है। इसलिए एक अन्धा अपने खौफनाक परिणाम से तब तक बच नहीं सकता जब तक कि वह भगवान् देवात्मा की शरण में न आ जाए। पूजनीय भगवान् फरमाते हैं कि मेरे देव् – प्रभाव तुम्हें इस दुर्गति से बाहर निकाल सकते हैं। उन्होंने फरमाया है कि देव प्रभाव पाने की तीन विधियाँ हैं: –

1) भगवान् देवात्मा के साथ साक्षात रूप से जुड़कर हम उनके देव – प्रभाव पा सकते हैं।

2) उच्च – धर्म – संगत में शामिल होकर। या फिर

3) पूजनीय भगवान् देवात्मा द्वारा रचित धर्म – ग्रंथों का हृदय – गत अनुराग भावों से निरंतर पाठ और विचार करके देव प्रभाव लाभ किये जा सकते हैं।

प्रिय धर्म सम्बंधियों! प्राय: सात अरब की आबादी में हम चंद आत्माओं को नेचर ने यह सौभाग्य प्रदान किया है कि हम सत्य – धर्म का सत्य – ज्ञान और उच्च – बोध लाभ करके अपने मनुष्य – जीवन को सफल कर सकते हैं। काश! हम इसे सफल कर सकें।

(चन्द गुप्त)

पति पत्नी की उपेक्षा

प्यार और विवाह सबसे ज़्यादा किस कारण से दरकते हैं?

प्रेम दिवस के ठीक पहले यह सवाल बड़ा अजीब लगेगा, लेकिन शायद इसी में प्यार और रिश्ते को पुख्ता बनाने का रहस्य भी छुपा है।

जवाब आसान है: उम्मीदें पूरी न होने के कारण। लेकिन फिर यहां सवाल उठता है कि सारी उम्मीदें तो शायद अन्य रिश्तों से भी पूरी नहीं होती। परंतु, उम्मीदें पूरी न होने का कारण बताते हुए तो कोई भी अपने पिता, मां, भाई, बहन आदि से रिश्ते नहीं तोड़ता?

एक जान, कितने अरमान! विशेषज्ञ मानते हैं कि किसी भी रिश्ते से उम्मीदें स्वाभाविक हैं, लेकिन जब सारी उम्मीदें किसी एक ही व्यक्ति से लगा ली जाएं, तो उनका पूरा हो पाना नामुमकिन हो जाता है। क्या यह सच नहीं है कि आप अपने प्रियतम या जीवनसाथी के इर्दगिर्द ही सारी आशाओं और इच्छाओं का जाल बुन लेते/लेती हैं? हम उसमें पिता भी देखते हैं, मां भीं, भाई-बहन भी, दोस्त भी, यहां तक कि शिक्षक, मार्गदर्शक और अकसर सहायक या सहयोगी भी ढूंढने लगते हैं। और साफ़ कहा जाए, तो कई बार नौकर भी।

कभी सोचा है? अपेक्षाओं की सूची बढ़ाते और पूरी न होने पर बुड़बुड़ाते कभी इन प्रश्नों पर भी सोचा है आपने: -

- कैसे कोई एक व्यक्ति हमारी सारी खुशियों के लिए ज़िम्मेदार हो सकता है और कैसे वह हमारी हर इच्छा की पूर्ति में सहयोग कर सकता है?
- ठीक है कि प्रिय या जीवनसाथी को विभिन्न मौकों पर अलग-अलग भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं, निभानी भी चाहिए, परंतु क्या हर बार यह सम्भव हो सकता है?
- क्या प्यार करने या रिश्ता जोड़ने का मतलब एक खांचा बनाना और यह उम्मीद करना है कि सामने वाला आपके खांचे में फिट हो जाए?
- सबसे बड़ा सवाल यह है कि हम तो तमाम उम्मीदें लगा लेते हैं, किंतु क्या हम कभी ठहरकर यह सोचते हैं कि खुद वैसी ही उम्मीदों पर कितने खरे उतर पा रहे हैं?

प्यार को पहचानें तो : शुरूआत में सिर्फ़ साथ होना ही सुख देता है, फिर अपेक्षाएं बढ़ने लगती हैं। वे पूरी होती भी हैं। व्यक्ति बदलता भी है। ज़रूरत है, तो इसे देखने वाली दृष्टि की। गैरी चैपमेन ने 'फाइव लव लैंग्वेजेस' नामक किताब में बताया है कि प्यार और परवाह का पता केवल 'आईलवयू' से नहीं चलता। बकौल गैरी, अगर पत्नी बीमार हो और कभी रूमाल भी न धोने वाला पति बाल्टीभर कपड़े लेकर बैठ जाए, तो यह हज़ार बार कहने से बेहतर प्रेम-प्रदर्शन है।

वे बताते हैं कि हर किसी की प्रेम की अपनी एक भाषा होती है। वह उस भाषा को पसंद करता है और अमूमन उसी में अपना प्रेम जताता भी है। मसलन, ऊपर के उदाहरण में उस पति की प्रेमभाषा है, सेवा। ऐसे ही प्यार की अन्य भाषाएं हैं- सराहना/प्रशंसा, उपहार, स्पर्श और गुणवत्तावपूर्ण समय बिताना। सम्भव है, आपकी और आपके साथी की भाषाएं अलग-अलग हों। साथी के बारे में कोई धारणा बनाने से पहले इन्हें पहचानना आवश्यक है।

बाकी पृष्ट 2 पर

कल्याण सत्संग में बैठकर

मैं भगवान देवात्मा जी का दिल की तह से धन्यवाद करती हूँ जिनकी अपार कृपा से तथा सहायकारी शक्तियों की मदद से इस पवित्र मन्दिर के दर्शन करने तथा अपना आत्मिक हित करने के लिए यहाँ पहुँच सकी! श्रीमान जी का धन्यवाद करती हूँ जिनके एक फोन ने मेरे अन्दर यहाँ पहुँचने की प्रेरणा तथा हिम्मत दी! इस मन्दिर में जहाँ पर गुरू महाराज जी के चरण पड़े हैं! श्रद्धेया डा० प्रेम देवी जी, श्रीमान देवत्व सिंह जी के चरण पड़े हैं ऐसी पवित्र धरा पर अपना माथा रखकर प्रणाम करते हुए दिल श्रद्धा से झुक गया, मैंने भगवान के लगाए दोनों वृक्षों को भी श्रद्धा से भरकर प्रणाम किया और अपना अहोभाग्य महसूस किया जहाँ मुझे तीसरी बार आने का मौका मिला!

सभा में बैठकर अपनी ओर ध्यान गया कि मैं हमेशा स्वयं को ही ठीक समझती रही दूसरे किसी को नहीं, क्योंकि जो मैं जानती हूँ ठीक जानती हूँ इनको तो पता ही नहीं इन्हें कौन सा गुरू महाराज जी मिले हैं जो इनको दिखाएं कि ये कहाँ पर गलत है इस बात के लिए मुझे अपनी उपकारी, हितैषी भाभी जी की याद आई। उनके अन्दर हमदर्दी, सहनशक्ति, मृदु भाषी, कम बोलने के गुण हैं, अच्छी समझ रखती हैं, मैं समझती रहती हूँ ये अपना ध्यान नहीं रखतीं, न्याय की बात में भी बोलती नहीं, काम सेहत से ज्यादा करती रहती हैं, इनको घर पर सही तरह से शासन नहीं करना आता, वो कहती हैं अशोक तुझे घर गृहस्थी का नहीं पता, तेरी सोच इसलिए ऐसी है। क्योंकि मैं तो स्वयं को ठीक ही समझती हूँ परन्तु यहां पर आकर उनके गुण नज़र आए तथा उपकार नज़र आए जो मैनें अपनी भयानक बीमारी में उनके पास रहकर पाए। सभा में यह भी नज़र आया कि मैं तो हूँ ही स्वार्थी, उनमें ऐसा नहीं है इसलिए वो भगवन की सेविका न होकर भी मुझ से बढ़िया है।

- श्रीमान जी के घर ठहरकर बहन जी के नजदीक से गुण देखे उनके अन्दर कम बोलने तथा adjust करने का भारी गुण है, अपने से निकलकर दूसरों के काम करने का भाव है अपने लिए करवाने का भाव नहीं है! मैंने अपनी अबोधता से दो मग भी तोड़ दिए, मग गत्ते के डिब्बे में थे बहन जी ने मुझे नहीं कहा था तुम कप पकड़ाओ स्वयं ही पकड़ाने लगी क्योंकि मै तो स्वयं को समझदार ही समझती हूँ बहन जी ने आवाज़ लगाई कि डिब्बा टूटा है नीचे हाथ डालना। मैं समझदार ने तो पहले से ही डिब्बे की अवस्था देखकर नीचे हाथ लगाया था इसलिए बहन जी के बोलने पर ज्यादा चौकस होना चाहिए था सारी समझदारी निकल गई जब डिब्बा गिरा वो तो शुक्र है कुछ बचाव हुआ दो मग तो मेरी अबोधता, अज्ञानता मेरी अकड़ समझदारी ने तुड़वा ही दिए, मुझे बहुत आत्म ग्लानि महसूस हुई कि तू क्या समझती है खुद को इतने सुन्दर मग का बेमतलब नुकसान किया! अपनी अकल को कम लगाकर आंईदा ध्यान रखूँगी ।
- पाप और अपराध में अन्तर मुझे तो पहली बार ही नज़र आया है! धर्मवान व्यक्ति अधिक से अधिक विश्वास के काबिल बन जाता है मैं स्वयं को टटोल रही थी मैं कितनी विश्वास के काबिल बनी हूँ जो थोड़ा बहुत है वो तो माता – पिता की पूंजी और मेरे गुरू की कृपा के कारण है वरना मैं स्वयं तो हर एक को संदेह की दृष्टि से देखती रहती हूँ, तो और कोई मुझ पर कैसे विश्वास करे, परन्तु भगवान की कृपा से किसी किए वायदे या काम को पूरा करना अपनी जी – जान लगाकर पूरा करने का

स्वभाव बना है। ईमानदारी का जो जबरदस्त गुण मेरे पिता जी से मुझे विरासत में मिला था उसी की बदौलत जहाँ मैं रहती हूँ वहाँ पर मेरी मुँह बोली बहन, सारा घर खुला छोड़कर चली जाती है, मैं भी अभी सत्संग में आई हूँ एक साल अपनी बीमारी में अहमदाबाद रही तो घर खुला ही रहा इस ईमानदारी और विश्वास का श्रेय मेरे पिताजी को जाता है जिन्होंने हम चारों बहन-भाईयों के अन्दर ये भाव पैदा किया। उस पर मोहर देव समाज में आकर लग गई। धन्य हो सतगुरू आप जो मुझ जैसे बेकदरों, नाशुक्रों को सुधारने का बीड़ा उठाए हुए हो!

धर्मवान बनने के जो नियम बताए गए हैं उसके लिए सच्चे अर्थों में प्रेरणा ली है कि मैं ऐसा करूँगी, अपने जीवन को निष्फल होने से बचाने के संग्राम में जुटूँगी।

लाल भाजी वाली घटना से मुझे अपने माता जी के उपकार नज़र आए थे कि उन्होंने हमें मांगने की आदत से हमेशा बचाए रखा जो अब तक भी कायम है। हमारे घर में बिना मसालों की पौष्टिक सब्जी बनती थी जिसकी शकल कक्षा में जो दूसरी सहेलियां लाती उस जैसी न होती, सहेलियां जैसे कहती ले लो, मैं कभी न लेती, बीजी कहते हम देसी घी Pure बनाते हैं सो ऐसी आदत बनी कि अब तक भी मैं नमक हल्दी डालकर simple सब्जी खाती हूँ बड़े स्वाद से कभी उधर रुझान नहीं जाता। हमेशा सुनते रहते है धर्मवान बनना चाहिए, धार्मिक बनना चाहिए लेकिन वास्तव में धर्म है क्या? और धर्म कैसे आएगा? ये बहुत ही अच्छी तरह से गहराई से अब समझ आया! इस परिपेक्ष में मैनें स्वयं को टटोला तो अपने नम्बर जीरो लगे। मुझे नजर आया मैं तो स्वयं को ही समझदार, न्यायकारी, बड़ी अच्छी समझती रहती हूँ इसलिए बड़ी भाभी जी से भी उलझ जाती हूँ जबकि कई बातों में मुझ से वो बहुत अच्छी हैं क्योंकि मुझ पर तो देवसमाजी होने की मोहर हैं तो घमंण्ड वश दूसरे इन्सान की न्यायप्रियता नज़र नहीं आती थी जब कि भाभी जी परिवार में रहती हुई इससे ऊपर हैं।

माता-पिता की सभा में तो ऐसा मण्डल बना कि माता-पिता के गुणों और उपकारों की याद की बौछारों से अश्रुधारा बहने लगी, हृदय से धन्यवाद निकला इस धरा के लिए सहायकारी शक्तियों के लिए। वयोवृद्ध श्रीमान जी की मेहनतों के लिए बहुत-2 धन्यवाद निकला जो हम जैसे बेकारों को बन्दे बनाने का काम कर रहे हैं।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,

House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022

Phone : 0172 -2716914

कल्याण सत्संग

इस वर्ष कल्याण सत्संग 18 फरवरी से 21 फरवरी 2016 तक रखा गया। इसके लिए टैलीफोन वा पत्रों के द्वारा धर्म सम्बन्धियों को सूचित किया गया। प्रवेश सभा में ही अम्बाला, लखनऊ, यमुनानगर, पंचकूला, चन्डीगढ़, केसूपुरा, पदमपुर, गंगानगर, गज सिंह पुर, गोनियाना, महिमा आदि स्थानों से धर्म सम्बन्धी पहुंच गए थे। अगले दिल मल्लेका, अम्बाला, मेरठ, मानसा आदि से कई धर्म सम्बन्धी पहुँच गए थे। लोकल वा बाहर से आए हुए जनों से सभा स्थान भरा हुआ था। सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी वा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। लोकल सेवकों ने रहने वा खाने का सारा प्रबन्ध किया। साधन स्थान को साफ सुथरा किया।

पहली सभा 18.2.2016 को रात 7.30 बजे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। उन्होंने बताया कि आज इस गांव में तीन डेरों पर धर्म के साधन किए जा रहे हैं। एक में अखण्ड पाठ और एक में कहलाने वाले साधू की बरसी मनाई जा रही है। इसमें शराब मांस का खूब सेवन हो रहा है और कव्वालियां गाई जा रही हैं। तीसरा हमारा स्थान है, वैसे तो हरेक अपने धर्म को प्यार करता है और उसका पक्षपाती बन जाता है। यह निर्णय मनुष्य ने स्वयं करना होता है कि कौन सा धर्म भलाई का काम कर रहा है। यह ऐसा स्थान है कि जहां मनुष्य को मिथ्या विश्वासों के प्रति होश मिलती है। बुरे कर्मों, पापों, अपराधों के प्रति ज्ञान दिया जाता है। और उनके प्रति उच्च घृणा पैदा की जाती है। उन्होंने सत्संगियों को इस सत्संग का प्रभावशाली शब्दों में महत्व बताया।

19.2.2016 सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य की हानि और लाभ के लिए दो मुख्य चीज़ें हैं, एक उसकी विरासत जो उसके हाथ में नहीं, वह जन्मजात है। उस पर उसके जीवन का अच्छा वा बुरा बनना काफी हद तक निर्भर है। दूसरा मुख्य कारण उसका वातावरण है। यह मनुष्य की विरासत को प्रबल रूप से प्रभावित करता है। अच्छे स्कूलों, कालिजों का वातावरण उच्च कोटि के विद्वान पैदा कर देता है, इसलिए माता पिता की बच्चों को अच्छे स्कूलों, कालिजों में दाखिल करवाने की होड़ लगी हुई है। सच्चा धार्मिक वातावरण मनुष्य को भलाई की ओर ले जाता है। बुरा वातावरण मनुष्य को तबाह और बर्बाद कर देता है। एक खाते पीते घर की लड़की एक खानाबदोशों के साथ भाग गई, क्योंकि वह हर रोज़ उसे लाल भाजी खिलाते थे। इस प्रकार एक जैलदारों का लड़का बुरी संगत में बुरी तरह बर्बाद हो गया। विनाशकारी वातावरण की हानियों के कई उदाहरण प्रस्तुत किए। देवात्मा का पैदा किया हुआ वातावरण बहुत सुन्दर घटनाएं पैदा करता है। पिछले दिनों संगरूर में एक नौजवान अपनी पत्नी के प्रति अपनी क्रूरता को याद करके अपने थप्पड़ मारने के लिए मजबूर हो गए। ऐसे क्रूर इन्सान को भगवान ने पत्नी से क्षमा मांगने और सेवा करने के योग्य बना दिया है। उस दौरान केसूपुर का एक नौजवान सभा में खड़ा हो गया और अपनी अश्लीलता की घटना ब्यान करने के लिए मजबूर हो गया। गुरू के प्रभावों की महिमा हाजरीन को अनुभव हो रही थी।

3.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि मनुष्य अपने नीच सुखों के अन्धकार में देवात्मा की रोशनी के महत्व को नहीं समझता। उन्होंने एक अंग्रेजी कहानी, The Country

of the Blind सुनाई कि किस प्रकार आँखें रखने वाला जन वहां पहुंच गया, वह उनकी मदद करना चाहता था, परन्तु वह उसे पागल समझते थे, इसी प्रकार हमारे सारे भावों से हमारा अहं अनुराग महा ख़ौफ़नाक है। यह घोर अन्धता अपने जीवन साथी के सम्बन्ध में गुरू ने दिखाई, जिसका शुक्राना किया नहीं जा सकता। ऐसे ही एक सुन्दर वातावरण में एक प्रिंसीपल ने अपनी पत्नी के प्रति बेवफाई के लिए भरी सभा में क्षमायाचना की। उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य अपने साथियों, बच्चों और अन्य सम्बन्धियों से अन्याय करता है। सभा के बाद एक वकील साहिब ने अपने पत्नी के प्रति अपनी ग़ल्तियों का इज़हार किया और कहा कि मुझे इस सभा से बहुत लाभ हुआ है।

19.2.2016 रात 7.30 बजे :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। इस सभा में हाज़री 70-80 के लगभग थी। उन्होंने बताया कि नेचर में घटनाओं के घटने के अटल नियम हैं। उनके विरुद्ध महान से महान व्यक्ति द्वारा कोई घटना सम्भव नहीं। मनुष्य ने शिक्षा, बिमारियों आदि का ज्ञान इन अटल नियमों को जानकर ही पाया है। मनुष्य जो सुख अनुरागों की प्रकृति रखता है। इन सुखों की उत्पत्ति और विकास भी नियमों के अनुसार होता है। उन नियमों का फल भी अटल है। सुख अनुरागों के बढ़ने के साथ मनुष्य अन्धकार ग्रस्त हो जाता है। इस अन्धकार में अपनी और औरों की महा हानि करने के लिए मजबूर हो जाता है। सभापति जी ने काम सुख, धन सुख अनुराग की बहुत घृणित सच्ची घटनाएं बताई। इन नीच सुखों से निकलने के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की आवश्यकता है। उनके देव प्रभावों के द्वारा श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने कल्याण के नम्बरदार सरदार सुच्चा सिंह, बाहिया के सरदार श्रीमान हरनाम सिंह जी को बर्बाद होते हुए बचाया। गांवों में नारी आश्रम खोले गए। असहाय, अनपढ़ स्त्रियों को आत्म निर्भर बनाने का काम किया गया। उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी उदाहरणों द्वारा इस विषय को और स्पष्ट किया।

20.2.2016, सुबह 9.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। भजनों का गान भटिंडा के किशोरी लाल जी और जगदीष जी ने किया । फिर सभापति जी ने प्रश्न किया कि विद्या क्या होती है? कई उत्तरों के बाद उन्होंने स्पष्ट किया कि विद्या की प्राप्ति के लिए भाषा का ज्ञान आवश्यक है। उसी प्रकार धर्म प्राप्ति के लिए धर्म का ज्ञान होना आवश्यक है। हृदय भूमि पापों से मुक्त हुए बिना धर्म नहीं ग्रहण कर सकती। इसीलिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मोटे पापों से मुक्त होने पर ही सेवकी ग्रहण की प्रतिज्ञा रखी है। मोटी बुराईयों से बचकर कुछ ऐसे भाव पैदा करने की आवश्यकता है, जैसे ईमानदारी, पवित्रता, न्याय विषयक भाव, यह मुख्य भाव हैं, जिनकी प्राप्ति से ही धर्म पाना सम्भव है। गुरू नानक देव जी ने भी कहा है, "हक पराया नानका, उस सूअर, उस गाय" ईसा मसीह ने कहा है कि व्यभिचार के ख़्याल से ही मनुष्य व्यभिचारी बन जाता है। पूजनीय भगवान की रोशनी में यह दोनों भाव महा घातक हैं।

इससे आगे धर्म के और अंग हैं, श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी, हानि परिशोध । इनको पैदा करके ही आत्मा का विकास होता है। "अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी, जहन्नुम भी, यह ख़ाकी अपनी फितरत से, नूरी है, न नारी है।" सभापति जी ने शुद्ध परोपकारियों के

उदाहरणों द्वारा अपना विषय खूबसूरती से स्पष्ट किया। इस सभा ने श्रोतागणों के हृदय को गहराई से छू लिया। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी।

3.30 बजे दुपहिर :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को चलाने वाले उसके परिचालक भाव हैं। यही शक्तियां उससे सब व्यवहार करवाती हैं। धन अनुराग, लालच, स्वार्थ, काम अनुराग, यही भाव सब पापों और भ्रष्टाचारों का कारण हैं। यह कोई पिछले पापों का फल नहीं। इनको जानना, इनके फलों को जानना, उनके द्वारा गतियां हुई हैं, उनका जो परिणाम हुआ है, उससे जीवन का क्या बना है, यह सब जानना आत्मा का ज्ञान है। महान दार्शिनिक ने कहा है Know thy Self इन भावों का ज्ञान भगवान देवात्मा की रोशनी में ही हो सकता है। उनसे बचने का बल मिलता है। जब मुझे अपने काम अनुराग की घृणित तस्वीर नज़र आई तो रक्षा के लिए गुरू का दर ही नज़र आया, बड़ी सरलता से उन्होंने अपनी पहली नीच ज़िन्दगी का वर्णन किया। इस उपकार का बदला मैं नहीं दे सकता। सच्चा धार्मिक जीवन जीने के लिए मनुष्य को दृढ़ निश्चय करना पड़ेगा। यह सत्गुरू की रोशनी में ही सम्भव है।

रात 7.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी - इस सभा में भी 70-80 जन शामिल थे। सभापति जी ने बताया कि पाप जीवन से हमेशा दुख, हानि और विनाश की प्राप्ति होती है। धर्म जीवन से सुख, लाभ और विकास प्राप्त होता है। फिर एक नीच जीवनधारी की घटना बताई कि किस प्रकार वह और उसका परिवार बर्बाद हुआ। कितने नौजवान नीच जीवन से मौत को प्राप्त होते हैं, उनके उदाहरण पेश किए। परम पूजनीय भगवान देवात्मा हमारा निजी और परिवार का भला करते हैं। फिर नीच जीवन से बचकर उच्च जीवन प्राप्त जनों के बहुत सुन्दर उदाहरण दिए। यह भी बताया कि गुरू के सेवक, बाकी मानव समाज के मुकाबले में कैसे बरकत की खान बन जाते हैं। उनके लिए भी कनल जी जैसे उच्च कोटि के अध्यापक मेरी प्रेरणा बने। यह सभा बहुत रोचक और प्रभावशाली थी।

21.2.2016 सुबह 9 बजे :- विशेष सभा इसमें पूजनीय भगवान का छवि द्वारा अर्चन करके, देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। सभापति जी ने फरमाया कि यह सभा हम अपने माता पिता के सम्बन्ध में कर रहे हैं। हमारा जीवन सम्बन्धों में है। हमारा विनाश और विकास हमारे सम्बन्धों पर ही आधारित है।

भजन गाया गया, "श्रद्धा भाजन माता पिता जी, श्रद्धा भाव करूं उपहार"। मनुष्य पशुओं से विकसित हुआ है, परन्तु उसकी मान्सिक शक्तियां विकासशील हैं। इन शक्तियों के द्वारा मनुष्य ने बाह्यक बहुत उन्नति की है। परन्तु अपने विषय में वह अन्धकार में हैं।

मैं क्या हूं! मेरे भीतर सबसे कीमती वस्तु क्या है? मनुष्य को कौन चलाता है। इस विषय में वह पूर्ण रूप से अन्धेरे में है। हम इस कदर अन्धेरे में हैं कि माता-पिता का भी रूप नज़र नहीं आता। उनके दुखों की ओर ध्यान नहीं जाता। यह हमारी आत्माओं में उच्च भावों की कमी है। किसी ने सही शब्दों में आत्मा को ही define नहीं किया । मनुष्य के पास अपने दुख, उसकी तड़पन का कोई थर्मामीटर ही नहीं होता। और धर्मों का सबसे ज़्यादा ज़ोर जाप, सिमरण पर है। देव समाज का सारा ज़ोर सम्बन्धों को सुधारने में है। अच्छा इन्सान बनना धर्म है। बच्चे मां बाप को दुखी करते हैं। कई

मारते है, कई तो संगलों से बांध देते हैं। भगवान ने सम्बन्ध तत्व खोजा है। उन्होंने फरमाया है, "मैं इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग लाना चाहता हूँ" सम्बन्धों में नर्क मनुष्य के हृदय के भावों में है। सात्विक रोशनी भी किसी सीमा तक हमें रोशन करती है। डाक्टर राधाकृष्णन जी जब रूस में अम्बैस्डर थे, तो उनको स्टालिन ने विश्व की समस्याओं को और उसके हल को दो शब्दों में बताने के लिए कहा। उन्होंने फरमाया, "मैं भी हूं, और भी हैं" हम अपने उपकारियों की मेहरबानियां गिन ही नहीं सकते। माता पिता हमारे प्रथम सम्बन्धी हैं। उनका रूप भी नज़र नहीं आता। Abraham Lincolon सात्विक व्यक्ति थे। वह कहते थे, मैं जो भी हूं, जो बनने की आशा रखता हूं, उसका सेहरा मेरी मां को जाता है। माता पिता के द्वारा हमें अच्छे जीन्ज़ मिलते हैं। माता पिता हमें पालने, पढ़ाने आदि के लिए तप करते हैं। मेरी माता महान थी। उन्होंने कभी पैसे की परवाह नहीं की, यही कहा कि जहां तक पढ़ सकते हो, पढ़ो। गुरू महाराज ने माता पिता दिखा दिए, यह उनका महान उपकार है। सभापति जी ने स्नेह और सत्कार की दिल को छूने वाली घटनाएं बताई।

इसके बाद कुछ जनों ने भाव प्रकाश किए, कुछ ने बाद में लिखकर दिए :-

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- देवात्मा गुरू को बार बार नमन है, जिन्होंने इस नारकीय दुनिया को स्वर्गीय बनाने का बीड़ा उठाया है। सभापति जी का मां के प्रति परिवर्तन बहुत गज़ब का है। जिनकी अपनी माता इनके हाथों दुखी थी, अपनी मां के सम्बन्ध में तो उनका व्यवहार बिल्कुल बदल गया अब तीसियों वर्षो से दूसरों के माता पिता के दुख दूर करने के संग्राम में लगे हुए हैं।

मुझे हमेशा दुख रहता है कि मुझे जितनी सेवा अपने माता पिता की करनी चाहिए थी, वह नहीं की, अब अपने बहन भाईयों के लिए सेवाकारी होकर माता पिता को प्रसन्न कर सकूंगा। आज के वृद्ध आश्रम सन्तान के मुंह पर तमाचा हैं। भारतीय सभ्यता पर कलंक हैं। यदि माता पिता दुखी हैं तो यह सन्तान की नालायकी है। गुरू महाराज ने इस पक्ष में हमारा मार्गदर्शन किया है। अपने प्रभावों के द्वारा वह नारकीय परिवारों में स्वर्ग लाते हैं।

श्रीमान जगदीष जी कुक्कड़ :- मैं अपनी मां के उपकारों की गिणती नहीं कर सकता। मेरी माता ने मुझे तीन बार जन्म दिया है। एक बार तो जन्म देकर, मान्सिक, शारीरिक योग्यता दी है। 9 वर्ष की उमर में मैं लगभग मरने वाला था। मां ने हर सम्भव डाक्टरों, वैदों द्वारा ईलाज करवा कर मुझे दूसरा जन्म दिया। 30-32 वर्ष की उमर में फिर मैं मौत के करीब जा रहा था। नशों के कारण मैं मौत के मुंह में जाने वाला था। मां ने सत्गुरू का दर दिखाया और मुझे उस नीच जीवन से बचाकर तीसरा जन्म दिया। मैं बाकी की ज़िन्दगी मिशन की सेवा करूंगा।

श्रीमान जलधर जी का पत्र अलग दे रहे हैं।

श्रीमान जगीर सिंह जी :- मुझे नहीं पता था कि मेरा इतना भला होगा। मेरा बहुत मन्दा हाल था। गल्त वातावरण में अत्याचारी बन जाता हूं। इस भाव से आया था कि श्रीमान जी के दर्शन हो जाएंगे। परन्तु यहां आकर माता-पिता का उपकारी रूप नज़र आया है। मां के भीतर हमदर्दी और पिता ग़ज़ब के ईमानदार थे। मेरे पिता जी के दादा जी दूसरों को क्षमा कर सकते थे। अपना घृणाकारी वा ईर्षालु रूप सामने आकर दुखी कर रहा है।

मुझे अधिक से अधिक गुरू से जुड़ने की आवश्यकता है, परे चला गया तो मर जाऊंगा।

गुरूदीप सिंह जी (नये जन) हम तीन भाई हैं, एक भाई मेरे पास आता था तो मैं लड़ पड़ता था। अब वह मर गया है। अब सब कुछ बराबर बांट रहे हैं, यही उसके प्रति श्रद्धांजली है। पिता का रूप नज़र नहीं आता था। यहां आकर पता लगा है कि मैं उनके साथ भिड़ जाता था।

गोपाल जी :- कठोरपन और अन्धापन महसूस होता रहा है। बहुत कमियां हैं। उपकारियों की उम्मीदों पर पूरा नहीं उतरता। मेरे उपकारी, मेरे मां बाप भी मुझसे दुखी हैं। नाशुक्रेपन की भी कोई हद नहीं। सभा में बैठकर पिता जी के उपकार नज़र आते हैं। पिता जी गन्दे कामों से रोकते रहे, परन्तु सत्संग से कभी नहीं रोका। उनके सहयोग से ही देव समाज मिली है। मां के उपकार भी व्यर्थ जा रहे हैं। पूरी ईमानदारी भी नहीं है। यह नज़र आया है कि जब उपकारियों की आज्ञा नहीं मानते तो इसके अर्थ है, सन्मान नहीं है।

मनोज जी (मानसा):- बहुत वर्षों से आ रहा हूं, परन्तु ऐसे दर से उतना लाभ नहीं उठा सका । मुझे श्रीमान तेजराम जी (कल्याण) इस दर से जोड गए। मेरे माता – पिता बचपन से मर गए थे। अब माता के उपकार नज़र आ रहे हैं। मेरे माता जी कैंसर से चली गई। मेरी माता, पिता जी के घर आने से खड़ी हो जाती थीं। उनके मन में मेरे पिता के लिए कोमल भावनाएं थी। मेरे पिता दूध का आधा गिलास मुझे दे देते। हमारी आवश्यकताएं अपनी हैसीयत के अनुसार पूरी करते थे। पिता जी को टैंशन से हार्ट अटैक हो गया।

श्री भूरा सिंह जी :- (महिमा सवाई) माता पिता कितनी कुर्बानी करते हैं। D.M.C. में मैं बिमार पड़ा था। I.C.U. में था। एक और मरीज़ मेरे पास था। उसकी टांग फटने को आई हुई थी। वह समैक के साथ पकड़ा गया। टीके लगा लगाकर टैटनस हो गई, उसकी मां उस बेकार बेटे की सेवा कर रही थी।

मेरा पिता जी से तकरार हो जाता था। मुझे सभाओं से प्रभाव मिले और मेरा तकरार बन्द हो गया। मुझे जो कुछ यहां से मिला है, उसकी समझ अब आई है।

समय काफी हो गया था। उसके बाद सन्तान द्वारा माता पिता का हार डालकर सन्मान किया गया। कई सन्तानों ने माता पिता के चरणों में शीश रखकर सन्मान किया। सभापति जी ने इस सत्संग में सहायता करने वाले सारे जनों का धन्यवाद किया। 13 हज़ार के करीब दान इकट्ठा हुआ। पूजनीय भगवान की चार बार जय ध्वनि के साथ वह पावन उत्सव समाप्त हुआ।

(एक हाजरीन)

पृष्ट 20 का बाकी

अब मैं जब अपनी धर्म पत्नी को देखता हूं तो मेरी सिसकियां निकल जाती हैं। अपने आप से घृणा और उसका महान रूप नज़र आता है। कई बार गिड़गिड़ाकर उनसे क्षमा याचना कर चुका हूँ। वह मुझे अब अपनी उपकारी नज़र आती हैं। मां के बाद मेरा वह पहले से भी ज़्यादा ध्यान रखती हैं। मेरी यही कामना है कि परम पूजनीय भगवान की कृपा और सत्संग के प्रभावों से जो मैं दुख में से गुज़र रहा हूँ, उसे भूल न जाऊँ और उच्च दुख का भागी बन सकूं।

अति तुच्छ, दीन हीन झंडा सिंह

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

उच्च प्रभावों में बैठकर

(करनाल से एक धर्म सम्बन्धी लिखते हैं)

मैं आपको अपनी मैली, काली कलूटी सूरत दिखाना चाहता हूं । मैं आर्मी से दो महीने के अवकाश पर रणखण्डी आया हुआ था। मेरी धर्म पत्नी की छोटी बहन, जिसकी मेरे छोटे भाई से शादी हुई थी, उसका स्वभाव कुछ चंचल वा गुस्सैल था। वह सुबह सोकर भी देरी से उठती थी। एक दिन मेरी मां ने कहा कि दुपहिर का खाना तुम्हारी बहन बनाएगी। परन्तु मेरी धर्म पत्नी ने खाने की पूरी तैय्यारी कर ली थी, उसने कहा कि, खाना मैं ही बनाऊंगी। यही बात मेरी मां ने मुझे बता दी। यही बात सुनकर मुझ जल्लाद ने बिना सोचे समझे बिना सही ग़ल्त को जाने अपनी शैतानियत के जोश में अपनी हैवानियत का बहुत भद्दा प्रदर्शन किया और एक रस्से की हन्टर बनाकर अपनी गाय जैसी धर्मपत्नी पर प्रहार करना शुरू किया, जिससे घर में महा रुदन मच गया। मेरी मां बाहर चारपाई के पावों पर काला तेल (वेस्ट इंजन आयल) लगा रही थी, भागी आई और दूसरे घर वालों से मिलकर पकड़कर मुझे छुड़ाने लगी और ज़ोर ज़ोर से दहाड़ें मारकर रोने लगी। इसे मैं मां भक्ति समझ रहा था, जब वह मेरी ओर झपटी तो काला तेल मेरी कमीज़ पर लग गया। मेरी पत्नी रोती रही और कहती रही कि मार लो जितना मारना है। बाद में उसी ने मेरी कमीज़ धोई, बटन लगाए, सिलाई की। यह घटना 1979 – 80 की है। लेकिन मुझे 2002 तक इस कुकर्म से कोई ग्लानि नहीं हुई। फिर मैं देव समाज से जुड़ा तो मुझे अपना बेदर्दीपन नज़र आया। जब मैं डेराबस्सी में देव धर्म मिशन के सत्संग में शामिल हुआ और विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी की सभाओं में शामिल हुआ, तो मुझे अपना घिनौना रूप नज़र आया। मैं अदना दुख से भर गया और ब्यान करने के लिए विवश हो गया ताकि मैं अपनी काली करतूतें भूल न जाऊं। और अधिक मात्रा में अपनी भुतनी सूरत याद रखूं।

"भूलूं न तुमरी कृपा, भुलूं न अपनी हालत
मैं दीन भिक्षाकारी, तुम दाता और मालिक"

बाकी पृष्ट 19 पर

विशेष सत्संग

देवाश्रम (निकट डेराबसी) में पहले की तरह फिर 22 अप्रैल, 2016 से 10 दिन का विशेष सत्संग रखा गया है। संगत अभिलाषी जन पधारने की कृपा करें। ठहरने और सादा खाने का प्रबन्ध होगा ।

प्रार्थी बलदेव सिंह

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts